न्यायरत्न दर्पण.

जिसको
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न
महाराज-शांतिविजयजीने मुरतिब किया.
मुकाम-सीरपुर-खानदेश.

इसमें जहोरी दलिपसिंहजी-साकीन कलकत्ताके
पत्र और सवालोंके जवाब दर्ज है.

[जिसको]
शेठ भीखचंदजी भावाजी साकीन पाचोरा मुल्क खानदेशने
फायदे जैनश्वेतांबरसंघके छपवाकर जाहिर किया.

प्रथमावृत्ति (२५००)

(दोहा.)

परालब्ध पहले बनी-पिछे बना शरीर,
तोभी यह आश्चर्य है-मनुष्य न धारे धीर. १

को ! सुख को ! दुख देत है-देत कर्म झकझोर,
उरजत सुरजत आपही-धजा पवनके जोर. २

अहमदाबाद.
धी " डायमंड ज्यूबिली " प्रिन्टिंग प्रेसमें
परीख देवींदास छगनलालने छापा.

संवत् १९७२. सन् १९१५.

[दिबाचा.]

☛ बयाने शुरुआत किताब.

इस किताबके छपनेमे देरी इसलियेहुइकि इनदिनोमे मुजे काम बहुत रहा, कइदिनोतक किताब न्यायरत्नदर्पण लिखीहुइ पडीरही, मेरेनामपर कोइमहाशय सवालपुछे, या चर्चापत्र लिखे में उसकाजवाब बिनादिये नहीरहता, कभी बसबब कमफुरसतके जवाबदेनेमें देरीहोतीहै, मगर एसा कभी न होगाकि मैं किसीके सवालोका जवाब न दुं, इन्साफके साथ अछेशब्दोमें इबारत लिखना पसंद करताहुं इन्साफीलेख सबको पसंद होतेहै, इसको पढकर पाठकवर्ग फायदाहासिलकरे, जिसमहाशयको इसपर जो कुछ लिखनाहो शौखसे लिखे, मगर शर्तयहहैकि बजरीये अखबार या किताबके छपवाकर जाहिर करे, चीठीका जवाबदेना न देना यह ताल्लुक अपनी मरजीके है. इस किताबके पृष्ट अवलपर पंक्ति (११)मी देखो जहां कलगछ छपाहै, वहां कवलगछ जानना. आगे पर्वतिथिके और अधिकमहिनेके बारेमें किसकदर उमदादलिले दिइगइहै. ब गौर देखे, मुजे उमेदहैकि चर्चाके ग्रंथपढनेके शौकिनोको यह जरुर पसंद होगा, आपलोग इसको पढे, और फायदा हासिल करे.

[ग्रंथकर्त्ता.]

(किताब-न्यायरत्न-दर्पण.)

(जिसको.)

जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजीने फायदे आमके मुरतिब किइ.

इसमे जहोरी दलिपसिंहजी साकीन कलकताके पत्र और सात सवालोके जवाब दर्ज है

(दोहा.)

नमुदेव अरिहंतको, गुरु नमु निर्ग्रंथ;
स्याद्वादवानी नमुं, यही मुक्तिका पंथ. १

जैनश्वेतांबर मजहबमें इस वख्त, तपगछ, कलगछ, खरतरगछ, अंचलगछ, पार्श्वचंद्रगछ, लोकागछ और विजयगछ वगेरा कई भेद मौजूद है, चुनाये ! में खुद तपगछ समुदायमें हुं लेकिन ! मेरे सामने सब गछके श्रावक आतेजाते है, और फायदा धर्मका हासिल करते है. संवत् (१९३६) वैशाख सुदी दशमी मिथुन लग्नके वख्त मुल्क पंजाबमें जबसे मेने दिक्षा इख्तियार किई मुल्कोकी सफर करना शुरु किया, वीश वर्ष तक पैदल विहारसे मुल्क पंजाब, मारवाड, मेवाड, गुजरात, राजपुताना, मालवा वगेरामें फिरना हुवा. संवत् (१९५६) में जब मैरा चौमासा शहर लखनऊमें हुवा और वहांसे जब तीर्थसमेतशिखरकी जियारतको जानेकी तयारी किइ, आगे रैलमें बैठकर सफर करना शुरु किया, वीश

वर्ष पैदलविहारसे और बाद रैलसें मुल्क, मगध, बंग, अंग, कालिंग, कौशल, राजपुताना, मध्यप्रदेश, वराड, खानदेश, मालवा, दखन, तैलंग, कर्णाटक, महीशूर, कोकन, मारवाड, मेवाड, सिंध, पंजाब, कश्मिर वगेरामें कई दफे जाना आना हुवा. जहां जहां जिस जिस गछके श्रावक मिलते रहे अपने अपने गछसमुदायके बर्ताव करते रहे और फायदा धर्मका हासिल करते रहे.

मजहबी लेख लिखनेमें या किसीके सवालोंपर जवाब देनेमें मुताबिक धर्मशास्त्रोके और दाखलेदलीलोसें काम लेताहुं. धर्मके बारेमें कोई सवाल पुछे ऊसकामाकुल जवाब देना धर्मगुरुओका फर्ज है. और यह एक तरहकी नेंकी है. चाहे कोई उस बातको मंजुर करे या न करे धर्म और प्रीत जोराजोरी नही होती. अपनी कोंमको धार्मिक फायदा पहुचाना और सबको समझमे आसके ऐसे ग्रंथ बनाना यह भी धर्मगुरुओका एक कर्तव्य कार्य है, मेरी तर्फसे बने हुवे ग्रंथ मानवधर्मसंहिता, जैनसंस्कारविधि, रिसाला मजहब ढुंढिये, त्रिस्तुतिपरामर्श, बयान पारसनाथ पहाड, जैनतीर्थगाइड और सनमपरास्तियेजैन छपकर जाहिर होचुके है, कई वर्सोसे जैनपत्रमें मेरे लेख छपते है, आम जैनसंघ जानता है.

संवत् (१९७०)मे जब मेरा चौमासा शहरपुने मुल्क दखनमें हुवा तारिख (२७) जुलाई सन (१९१३)के जैनपत्रमें मेने जहोरी दलिपसिंहजी साकीन कलकताके सवालोके जवाब दिये. ऊन जवाबोको पाकर मुनासिब था बजरीये छापेके ऊनका माकुल जवाब देते. ऊनाने बजरीये चीठियोके मुजसे पुछना शुरू किया, मेरा रवाज है वादविवादके सवालोका जवाब बजरीये छापेके देना लेना. ताकि आमलोगोको फायदा पहुंचे, जब मेने ऊनकी चीठियोके जवाब बजरीए चीठीके नही दिया, उनोने कातिक वदी (८) संवत्(१९७०)के रौजे सोलहपंनोकी एक छोटीसी किताब छपवाई.

जिसका नाम न्यायरत्नजीकी बेंइन्साफी है, उसमें उनोने अपनी भेजी हुई पांचछह चीठियोंकी नकल और सात सवाल छपवाये उनका जवाब इस न्यायरत्नदर्पण किताबमें देताहुं. सुनिये !

जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके टाइटल पेजपर लिखा है, न्यायरत्नजीकी बेंइन्साफी और ऊत्सूत्रप्ररुपणा.

(जवाब) न्यायरत्नजीकी बेंइन्साफी और उत्सुत्रप्ररुपणा क्याथी ? बतलाना चाहिये था. मेने मेरे तारिख (२७) जुलाइ सन (१९१३)के लेखमें लिखा था कि अधिक महिना चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रतनियममें गीनतीमें नही लेना और हरेक महिनेकी जो बारां पर्वतिथि है, टुट जाय तो तोडना नही, पहलेकी अपर्वतिथिमें उस पर्वतिथिको शुमार करना. हरेक महिनेकी बारां पर्वतिथिदुज पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, पौर्णमासी इसी तरह वदीमें अमावास्या वगेरा जानना. ए बारां पर्वतिथिमेंसे कोईभी टुट जाय तो पीछली तिथिमें यानी दुजपर्वतिथि टुट जाय तो प्रतिपदाके रौज दुज शुमार करना. जहां चतुर्दशी और पौर्णमासी दो पर्वतिथि शाथ आवे और इनमेंसे कोई पर्वतिथि टुट जाय तो दोनोको नही तोडना. त्रयोदशीको तोडकर दोनो कायम रखना और अगर हरेक महिनेकी बारां पर्वतिथिमें कोई पर्वतिथि बढजाय तो पहेलीकों पर्वतिथि न मानकर अगलीकों पर्वतिथि शुमार करना, पर्वतिथि घटे तो पीछलीको मीले और बढे तो अगलीको मीले यह एक इन्साफकी बात है. जैसे तीन शख्श एक पीछे एक चलरहे है, उनमें बीचला शख्श अगर चलताहुवा थक जाय तो पीछलेकों मिलेगा, और अगर वही शख्श चलता हुवा ज्यादा चलजाय तो अगलेको मिलेगा. कहिये ! इसमें बेंइन्साफ क्या था ?

आगे आपनी किताबके पृष्ट अवलपर जहोरी दलिपसिंहजीने लिखा है, श्री जिनाज्ञाभिलाषी सर्व सज्जनोसे निवेदन करताहुं

कि, न्यायरत्न विद्यासागर मग्जने इल्म जैनधर्मोपदेष्टा प्रमुख विशेषणोंको धारण करनेवाले श्री शांतविजयजी महाराज शास्त्रोके प्रमाणोंसे सबके सवालोके जवाब देते है, तथा ऐसा कौनसा सवाल है कि जिसका उतर महाराज नही दे सकते है, इस मुआफिक बडाइकी बाते अकसर सुनताहुं.

(जवाब) विद्यासागर, न्यायरत्न जब दुसरे महाशयोके सवालोके जवाब देते होंगे जभीतो आप लोगोके सुननेमें ऐसा आया होगा कि हरेकके सवालोका जवाब शांतिविजयजी देते है, और उक्त विशेषणोंको धारण करनेवाले है.

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (२) पर तेहरीर किया है कि, सूर्य प्रज्ञप्तिकी वृत्तिका पाठ और उमास्वातिजीका वाक्य इन दोनो प्रमाणका विशेष खुलासा करनेके वास्ते पत्रद्वारा उनको लिखा. परंतु ऊसका जवाब न आनेसे दुसरा तीसरा अनुक्रम छह पत्र लिखे, जिसमें एक पत्रकी भी पहुंच न मिली.

(जवाब) एक पत्रकी भी पहुंच इस लिये नही मीली कि, बजरीये छापेके क्यौं नही पुछा ? जब बजरीये छापेके मेने जवाब दिये थे तो बजरीये चीठीके में खुलासा क्यौं लिखुं ? सूर्यप्रज्ञप्ति वृत्तिकी गाथाके बारेमें सुनिये ! पूर्वपक्ष करके अपने पक्षकी साबीतीके लिये कोई महाशय बजरीये छापेके पाठ देते जाय और बदलेके पाठ मुजसे लेते जाय. दोनो तर्फसे पाठ जाहिर होते रहे तो पढनेवालोको फायदा पहुंचे, मेने मेरे लेखमें पुछाथा कि किसी महिनेमें पुनम या अमावास टुट जाय तो बारह पर्वतिथिमें एक पर्वतिथि कम हुई. फिर बारह पर्वतिथिके रौज व्रत नियम करनेवाले कैसे वर्ताव करे ? क्या ! एक दिनका व्रत कम करे ? इसका कोई जवाब देवे. महाराज ऊमास्वातिजीका वाक्य जो मेने मेरे

(२७) जुलाई सन (१९१३) के लेखमें आधा दिया था. अब पुरा देता हुं, सुनिये !

क्षये पूर्वा तिथिःकार्या, वृद्धौ कार्या तथोत्तरा;
वीर निर्वाण कल्याणं, कार्यं लोकानुगैरिह.

इस पाठके लिये महाशय दलपतसिंहजीने अपनी किताबके (९) में पृष्टपर दुसरे पारिग्राफमें लिखा है, यह वाक्य श्राद्धविधि ग्रंथके भाषांतरमें मेरे देखनेमें भी आया है, बस ! फिर इससे ज्यादा सबुत और क्या होगा ? जब उनोने श्राद्धविधि ग्रंथके भाषांतरमें देखा है, तो साबीत हो गया शांतिविजयजीने नया नही बनाया.

आगे जहोरी दलपतसिंहजीने लिखा है कि उन छह पत्रोकी नकल करके सातमीवार रजीष्टरी भेजी उसका भी उत्तर न मिला.

(जवाब) तारिख (५)मी अक्टुबर सन (१९१३)के जैन-पत्रमें मेने जवाब दिया है कि आपकी चीठी पर्यूषणापर्वकी मिली, पहेलेकी चीठीये भी मिलीथी. ऊनकी नकल रजीष्टरी करके भेजी सोभी मीली. महाशय दलिपसिंहजीकी किताब कातिक वदी (८) मी संवत् (१९७०)के रौज छपी. मेने जवाब उसके पेस्तर दिया है.

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (२) पर इस मजमूनकों पेंश किया है कि–ऐसे विद्वान् इतने विशेषणोको धारण करनेवाले होकरके भी मेरे प्रश्नोका उत्तर न देकर सब पत्रोको दबा बेठे.

(जवाब) शांतिविजयजी किसीके पत्रोको दबा बेठे यह हर्गिज न होगा, अगर आप लोग बजरीये छापेके पुछते तो बराबर जवाब मिलता, मेरा रवाज है कि–वादविवादके सवाल जवाब बजरीये छापेके लेना देना याते पढनेवालोंकों भी फायदा पहुंचे.

आगे जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके (३) पृष्टपर लिखा है. मुनिश्री शांतिविजयजी योग्य दलिपसिंह जहोरीकी वंदना अवधारियेगा. में आजदिन यहां श्रीवा० जयचंद्रजीगणीसे मिला तो ऊनोने कहा तुमारे सवालका जवाब मु० श्रीशांतिविजयजीने छपवाये है, तुम क्या उत्तर दिया. तो मेने कहा ऊनोने जो पाठ छापेमें लिखे है उनका प्रमाण पुछा है कि किस ठिकानेका है? जवाब आनेके पीछे लिखुगा, उसपर ऊनोने कहा. क्या! जवाब देयगें. इस छापेमें महान् अनर्थ किया है, तीर्थंकरोके वचनोको उथापकर अपना और अपने रागी जीवोका संसार बढाया है, इस वास्ते उत्तरकी जगह वो तो मुख छिपावेगे. और तुम आनंद करो, ऐसा कहकर बडी हंसी करी—सो कृपाकर जल्दी ऊत्तर दिजियेगा.

(जवाब) जिनको सवालोका जवाब जल्दी लेना हो बजरीये छापेके मुजसे पुछे, मेरे लेखको पढकर कोई हंसी करे या आनंद मनावे ऊस बातसे में नाराज नही. मेरे लेखमें मेने कौनसा अनर्थ किया था? तीर्थंकर देवोके कौनसे वचन ऊथापन किये थे? वाचक—श्रीजयचंद्रजीगणिने बतलाया क्यौं नही? अबभी कोई बतलावे में जवाब दुंगा, मेरे लेख खिलाफ जैनशास्त्रके नही, इस लिये उनपर अमल करनेवालोको फायदा होना संभव है. जवाब देनेमें मेने मुख नही छिपाया है, देखिये! यह किताब ऊसके जवाबमेंही लिखी गई है, इसपर जिसको जो कुछ लिखना हो. शौखसे लिखे, में जवाब दुंगा. धर्मकी पुख्तगीके लिये कोइ मिशाल दिइ जाय या दुसरा सवाल पेंश किया जाय जोकि उस बातसे संबंध राखता हो यह विषयांतर नही कहा जाता. दरअसल! सत्यवक्ता सत्यको जाहिर करे. अकलमंदलोग सत्य बातको मंजुरही करते है.

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (५) पर लिखा है आजदिन श्री वा० जयचंद्रजीगणीने जंबूद्वीपपन्नतिमे (१३) मासका अभिवर्द्धित संवछरमें एक युगके पांच संवत्सर जिनके (१२४) पक्ष (१८३०) दिन ५४९०० मुहुर्त्त यह पाठ दिखाया सो इस पाठसे तो अधिकमास गिनतीमें प्रमाण है.

(जवाब) इस पाठमें अभिवर्द्धित संवत्सरका स्वरुप बतलाया है, मगर ऐसा कहां लिखा है कि चातुर्मासिक, वार्षिक या कल्याणिकपर्वके व्रतनियममें अधिक महिनेकी गिनतीमें लो, अगर आप जंबूद्वीप पन्नत्तिके पाठसे अधिक महिना गिनतीमें प्रमाण मानते है, तो बतलाइये ! जब दो आषाढ आते है, आपलोग पहिले आषाढमें चौमासा क्यौं नही बेठाते? इसका कोई जवाब देवे, चौमासा आपलोगभी दुसरे आषाढमें बेठाते है, अब ख्याल किजिये ! आपका अधिक महिना गिनतीमें प्रमाण कहां रहा ? चौमासा चार महिनेका होता है. फाल्गुनसे आषाढ तक जो चौमासा गिने तो पहले आषाढकी चतुर्दशीको चौमासिक प्रतिक्रमण करना चाहिये और करते है दुसरे आषाढकी शुक्ल चतुर्दशीको, इससे साबीत हुवा अधिक महिनेको गिनतीमें नही लिया, देखिये ! यह किसकदर मजबूत दलील है कि जिसका जवाब देना दुसवार होगा.

दुसरी मिशाल यहहै कि जब दो श्रावण आवे तो बतलाइये ! तीर्थंकर नेमिनाथजीके जन्मकल्याणिककी तिथि श्रावण सुदी पंचमी आप कौनसे श्रावण महिनेमें कायम करेगे ? पहलेमें या दुसरेमे ? अगर पहलेमें करेगे तो दुसरा श्रावण छुटेगा. और अगर दुसरेमें करेगे तो पहेला छुटेगा, अगर दोनोमे करेगे तो पुनरुक्तता आयगी ? इसका कोई खुलासा करे.

आगे जहोरी दलिपसिंहजीने उक्त किताबके (५)में पृष्टपर इस मजमूनको पेश किया है कि—आपको तो अपने लेख मानवधर्मसं-

हिताके पृष्ट (२४) पंक्ति (२०)पर जो जमालिसंबंधी लिखा है, उसका विचार करके जो छापेमे खोटे लेख छपवाये है, उनका छापेद्वारा मिथ्या दुकृत देकर आत्मशुद्धि करना चाहिये अगर सत्य लेख लिखा है, तो शास्त्रानुसार प्रमाण करियेगा.

(**जवाब**) मेने मेरे लेख शास्त्रानुसार प्रमाण करदिये है इस किताबको अवलसे अखीरतक कोई देखलेवे. और अगर गलत है तो ऐसा कोई साबीत करबतलावे, विना ऐसा किये मुजे कोई कैसे कहसकते है कि–मिथ्या दुकृत देकर आत्मशुद्धि किजिये, जिसके आत्माकों ऊत्सूत्र प्ररुपणारुपी अशुद्धि लगी नही, उसको शुद्धि करनेकी क्या जरुरत ? मेने मेरी बनाई हुई किताब मानवधर्मसंहितामें जो लिखा है कि–जमालिजीने ऊत्सूत्र भाषण किया मुताबिक सूत्र आवश्यक और ऊत्तराध्ययनके लिखा है, जिनकों शक हो ऊन सूत्रोमें देख लेवे. मेने ऊत्सूत्र भाषण नही किया अगर किया है तो कोई बतलावे.

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (६) पर लिखा है ऊपरके छह पत्रोकी नकल रजीष्टरी करके भेजता हुं. इसका जवाब आनेतक छपाना बंद किया है, अबभी कृपा करके ऊत्तर दिजियेगा, नही तो रजीष्टरीकी नकल मिलनेसे तीन दिन पीछे छपाकर प्रकट करुंगा. आसोज वदी (७) मी संवत् १९७०, दलिपसिंह जहोरी, सिकदरपाडा नंबर (१९) कलकत्ता.

(**जवाब**)में यही चाहता था कि बजरीये छापेके मुजसे जवाब मांगे, अछा हुवा आप लोगोने बजरीये छापेके मुजसे पुछा, मेरे पास कई महाशयोकी चीठी बजरीये डाकके रजीष्टरी होकर आती है, चीठीका जवाब देना या न देना मेरी मरजीके ताल्लुक है.

आगे जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके (८) में पृष्टपर इस मजमूनकों पेंश किया है सुर्य प्रज्ञप्तिकी टीकाका स्थान मेने पुछा

था, ऊनको बतलाना लाजिमथा, सों न बताकर इसी छापेमें आप लिखते है, किसी जैन पुस्तकालयसे मंगाकर देखिये, उसको मंगवाना और देखना आपका फर्ज है, सो लिखना अनुचित है. इतने बडे ज्योतिषके ग्रंथ देखनेकी मेरी योग्यता नही. दोयम ! यह सूत्र मंगवानेसे मुजे कोई भेजभी नही सकता, आगे यह भी लिखा है कि—इतने बडे गहनार्थसूत्रके देखनेकी मुजे आज्ञा आपने किस आधारसे दिई ?

(जवाब) इतने बडे सूत्रकी टीका देखनेकी आज्ञा मेने इस आधारसे दिइ कि—श्रावकोंकों टीका और भाषांतर देखनेका हुकम है. हां ! मूलसूत्रके पाठकों बाचनेका हुकम नही. यह सूत्र आप अगर किसी जैन पुस्तकालयसें मंगवाते तो भेजनेवाले भेजभी सकते थे. आपको इन बातोंको देखनेका शौख था, इस लिये मेरा लिखना अनुचित नही था.

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (९) पर लिखा है आप अपने (२७) जुलाईके लेखका जवाब मुजसे छापेद्वारा मांगते है, सो अगर में आपसे शास्त्रार्थ करना चाहता तो आपका लिखना ठीक था, मेने तो अपनी शंका निवर्तनके लिये पुछा था. आगे (१०)मे पृष्टपर आपने लिखा है, आपके लेखका जवाब शास्त्र प्रमाणसे श्री जयचंद्रजीगणी देनेको तयार है.

(जवाब) तयार है तो अछी बात है बजरीये छापेके देवे, आगे आपने तेहरीर किया है कि सवाल जवाब एकही छापेमें छपे तो ठीक है. जवाबमें मालुम हो अखबारके मालिक अपने अपने अखबारके लिये स्वतंत्र है, चाहे किसीका लेख छापे या न छापे उनकी मरजीकी बात है, जिसके देखनेमें जवाब नही आयगा वे महाशय तलाश करके ऊस छापेकों मंगवा लेयगें.

आगे जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (१२)मे पर

इस मजमूनको पेश किया है कि–अगर आप ऊत्सूत्रप्ररुपणाको छोडे और शुद्ध प्ररुपणा करना मंजुर करेंगे तो आपकोभी गुरु मानुंगा, मेने इस लेखमे धर्मरागसे जो कुछ सख्त लेख लिखा है उसके वास्ते माफी चाहता हुं.

(जवाब) यह आपकी सज्जनता है, में किसी बातसे नाराज नही, मेरी ऊत्सूत्रप्ररुपणा कौनसी थी, बतलाना था, विना बतलाये कहना लाजिम नही, मेने मेरे लेखमें लिखा था कि–अधिक महिना चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रत नियममें गिनतीमें नही लेना सो ठीक है. आपलोगभी जब दो आषाढ आते है तो पहले आषाढमें चौमासा नही बेठाते, और कल्याणिकपर्वके व्रत-नियमभी दो दो दफे नही करते. फिर बात क्या हुइ? दरअसल! बात वही हुइ जो में कहताथा, मुजे कोइ गुरु माने या न माने. ऊनकी मरजीकी वात है. में इस बातसे नाराज नही.

[जवाब–जहोरी दलिपसिंहजीके सात सवालोका.]

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (१२)पर लिखा है कि अब कृपा करके नीचे लिखे प्रश्नोका ऊत्तर शिघ्रतासे जैनपत्रमें दिजियेगा.

(जवाब) चाहे जैनपत्रमें दुं या अलग दुं मेरी मरजीके ताल्लुक है, कहिये आपके सवाल क्या है?

सवाल–सूर्य प्रज्ञप्ति टीकाकी गाथा "अहजइ" इत्यादि और उमास्वातिजीका वाक्य–क्षयेपूर्वा इत्यादि ये दो प्रमाण आपने छपवाये है उसका खुलासा शास्त्रोके नाम प्राभृत–अध्ययन–पृष्ट प्रमुखसहित जिसजगहके हो सो लिखीयेगा.

(जवाब) महाराज ऊमास्वातिजीके वाक्यका पुरासबुत इसकितावकी शुरुआतमें देचुका हुं. सूर्यप्रज्ञप्तिकी वृत्तिकी गाथाके

लिये पाठ तारिख (२७) जुलाई सन (१९१३)के लेखमें दे दिया है आप लोगोकी तर्फसें मय शास्त्रसबुतके पाठ जाहिर होते रहे तो बदलेके पाठ मेरी तर्फसे भी जाहिर होते रहेगें, खरतरगछवालोकी तर्फसे जो शुद्ध समाचारी किताब छपी हुई है, ऊसके पृष्ट (१४६) पर महाराजश्री हरिभद्र सूरिकृत–तत्वविचारसार ग्रंथकी गाथा "भवइ जहिं तिहि हाणि"–तथा ऊमास्वातिजी रचित आचारवल्लभ ग्रंथकी गाथा "तिहि पडणे पुव्वतिहि"–वगेरा दिइ है, आंगे ऊसी शुद्ध समाचारी किताबके पृष्ट (१५०) पर वही महाराजश्री हरिभद्र सूरिजी कृत तत्व तरंगिणी ग्रंथकी गाथा "तिहि वुढीए पुव्वा"–दिइ है यह गाथा उपर लिखे ग्रंथोके कौनकौनसे अधिकारमें है, इसका मयसबुतके कोई पता लिखे, निहायत उमदाबात हो, क्योंकि दोनोतर्फसे पाठ जाहिर होते रहे तो पढनेवालेकोंभी फायदा पहुचे.

(**सवाल दुसरा**)–आप अधिक मासको कालपुरुषकी चोटी कहकर गिनतीमें लेनेका निषेध करते है, परंतु यहां–मुनिश्री मणिसागरजीके पासमें निशीथचूर्णि हाथकी लिखीके प्रथम उद्देशके पृष्ट (२१) में तथा दशवैकालिकवृहद्वृत्ति छपी हुइ कि–पृष्ट (६४१)में पहेली नरकके श्रीमंत नामा नरकावासेकी पृथवीको तथा हरेक मंदिरो–वा–पर्वतोके शिखरोकों और मेरुके उपरवाले (४०) योजनके भागको और सर्वार्थसिद्ध विमानके उपर सिद्धशिला ईन सबोको क्षेत्रचूला कही है. इसी माफिक बारां मासोके उपर अधिक मासकी तथा रितुमासकी अपेक्षासे साठ वर्समें जो एक वर्स बढे ऊसको और चौथे आरेके अंतके पांचमे छठे आरेकों कालचूला कहकर सर्वकालमानकों गिनतीमें लिया है, जैसे नवकारमंत्रके पांचपदोके (३५) अक्षरोके उपर चार चूलिकाके (३३) अक्षरोकों सामील करके (६८) अक्षरोके नव पदोकों नव-

कार कहते है, तैसेही बारां महिनोके उपरांत तेरहमे महिनेको गिनतीमें लेकर अभिवार्द्धित संवत्सर कहा है.

(जवाब) में पेस्तर भी लिख चुका हुं कि–यह अभिवर्द्धित संवत्सरका स्वरुप बयान किया है, मगर इसको चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें लो, अैसा इस पाठमे कहांलिखा है, चर्चा किसबातपर चलतीथी, और ऊतारतेहो–किसपर? निशीथचूर्णि दशवैकालिकवृहद्वृत्ति, और जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिके पाठसे यह बात साबीत नही होती, अगर आपलोग अधिक महिनेको गिनतीमें लेना प्रमाण मानतेहो, तो में इस किताबकी आदिमें पेस्तर लिख चुका हुं. दो आषाढ आवे जब पहेले आषाढमें चौमासा क्यौं नही बेठाते ? दो आषाढमे दो चौमासिक प्रतिक्रमण क्यौं नही करते? दो श्रावण, या दो भादवे महिने आवे जब दोदफे पर्यूषणपर्व तथा दोदफे संवत्सरीक प्रतिक्रमण क्यौं नही करते? आपका अधिक महिना गिनतीमें जब प्रमाण हो कि दोदोदफे उपर लिखे हुवे काम करे. और जब कोइ भी अधिक महिना आवे तो तीर्थंकरोके कल्याणिक पर्वकी तिथिके व्रत नियम दो दो दफे क्यौं नही करते? ईसका कोई जवाब देवे. इससे साबीत हुवा कि आप लोगभी उपर लिखे हुवे कामोमें अधिक मास गिनतीमें नही लेते, अभिवर्धित संवत्सरको अगाडी लाकर कहदेते हो. देखो! अधिक महिना गिनतीमे लिया है. में पुछता हुं फिर आपलोग व मुजब उपर लिखेके बर्ताव क्यौं नही करते?

में जो अधिक महिना चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिकपर्वकी तिथिके रोज व्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना कहता हुं, सो कल्पसूत्र और समवायांगसूत्रके पाठसे कहता हुं, सुनिये!

[पाठ कल्पसूत्रका.]

तेणंकालेणं तेणंसमयेणं समणेभगवं महावीरे वासाणं सविसए-राए-मासे विइक्कंते वासावासं पज्जोसवइ,

[पाठ समवायांगसूत्रका.]

वासाणं सवीसइ-राए-मासे विइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं,-

इन दोनों पाठोका माइना यह है कि-चौमासा बेठानेके पचासमे रौज संवत्सरीपर्व करना, और बाद संवत्सरीके (७०) दिन पीछाडी रखना, (५०) और (७०) मिलानेसे (१२०) दिन हुवे, और चौमासा पुरा हुवा, अगर अधिक महिना गिनतीमें प्रमाण होता तो कल्पसूत्र और समवायांगसूत्रके पाठमें ऐसाबयान जरुर होता कि यातो संवत्सरीके पेस्तर (८०) दिन रखना, या बाद संवत्सरीके (१००) दिन बाकी रखना. इससे साबीत हुवा कि अधिक महिना चातुर्मासिक-वार्षिक और कल्याणिकपर्व वगेराके व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें नहीं लेना, आप लोग जब दो श्रावण या दो भादवे महिने आते है, चौमासेके पचासमें रौज कल्पसूत्रके आधारसे संवत्सरी करलेते हो, मगर बाद संवत्सरीके जो (७०) दिन बाकी रखना समवायांगसूत्रका फरमान है उसपर ख्याल नही करते. क्यौंकि आप लोगोकी गिनतीसे बाद संवत्सरीके (१००) दिन रहजाते है, इसका कोई जवाब देवे.

सवाल-तीसरा, अनादिकालमें अनंतचौविशी बतीत हो गई, ईसमें अनंते अधिक मास हुवे, इसको सभी तीर्थंकरोने गिनतीमे लिये है.

(जवाब) अगर सभी तीर्थंकरोने अधिक मास गिनतीमें लिये है, तो तीर्थंकर महावीरस्वामीने चातुर्मासिक, वार्षिक और

कल्याणिकपर्वके व्रतनियममें अधिकमहिना गिनतीमें क्यौं नही लिया ? और (१२०) दिनका चौमासा कल्पसूत्र और समवायांगसूत्रके पाठमें क्यौं फरमाया ? तीर्थंकर महावीरस्वामी महाराज भी अतीतकालमें होये हुवे अनंते तीर्थंकरोमें ही है, कुछ जुदे तो है नही फिर ऊनोने एकसोपचास दिनका चौमासा क्यौं नही फरमाया ? इस बातको सौचो ! अगर अनंते तीर्थंकरोमें–महावीरस्वामीको गिनते हो तो ऊनका फरमाना मंजुर करो, यातो कहो ! हम अकेले कल्पसूत्रके पाठपरही चलते है. समवायांगसूत्रके पाठपर अमल नही करते, या कहो ! दोनों पाठोपर अमल करते है, अगर दोनो पाठोपर अमलकरोगे तो साबीत होजायगा. चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिपर्वके व्रत नियमकी अपेक्षा अधिक महिना गिनतीमें नही लिया जाता, मेरा कहना पहले भी यही था, और अबभी यही है.

आगे इसी तीसरे सवालमें जहोरी दलिपसिंहजीने लिखा है कि तीर्थंकरोके कल्याणिक मासवृद्धिसे प्रथम या दुसरे महिनेके पहिले या दुसरे पक्षमें जिसतिथिको हुवे हो ऊसी माफिक माने है.

(जवाब) इस लेखका मतलब यह निकला कि अधिक महिनेमे पनरांदिन पहले महिनेके छोडना, और पनरादिन दुसरे महिनेके छोडना, फिर बात क्या हुई ? बात यही हुई कि एक महिना तो बीचमे छुटही गया, मेरा जो कुछ कहना था वही बात आगई. दरअसल ! आपके अधिक महिनेका भेद यहां खुल गया, निशीथचूर्णि–दशवैकालिकवृहद्वृत्ति और जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिका पाठ कहां गया ? इधर ऊधर फिरकर ऊसी बातपर आये, जो शांतिविजयजी कहते थे,–इस लेखसे साबीत होगया कि आप भी कल्याणिकपर्वके व्रतनियममें अधिकमहिना गिनतीमें नही लेते.

फिर इसी तीसरे सवालमें जहोरी दलिपसिंहजीने लिखा है

कि आपके गुरु महाराजका स्वर्गवास संवत् (१९५३) प्रथम ज्यष्ठके दुसरे पक्षकी (७) मी मंगळवारको हुवा, तो जब दोज्येष्ठ मास होवेगे तब प्रथमज्येष्ठके दुसरेपक्षमें ऊनका ओछव होना चाहिये, तो फिर आप पुनरुक्ति दोष बताकर अनंत तीर्थंकरोकी आज्ञा उथापनकरके अपने संयम तथा सम्यक्तको हानिकारक प्ररुपणा क्यौं करते है,?

(जवाब) मेरी प्ररुपणा सम्यक्तको हानिकारक नही, और तीर्थंकरोके वचनको ऊथापन करनेवाली नही, आप लोग अधिक महिनेको गिनतीमें प्रमाण मानते हो, इसलिये आपको तीर्थंकरोके कल्याणपर्व दोदोदफे मानना पडेगा. फर्जकरो ! कभी दो पोष महिने आ जाय तब तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजका जन्म कल्याणक बतलाईये ! कौनसे पौषमें करेगे, अगर पहलेपौषमें करेगे तो दुसरा पौष छुटेगे, अगर दुसरेमें करेगे तो पहला छुटेगा, अगर दोनोंमें करेंगे तो पुनरुक्त दोष आयगा–अब सुनिये ! मेरे गुरुजीका उत्सव मुताबिक फरमान आपके पहेले ज्येष्टमे किया तो दुसरा ज्येष्ट छुटा, और दुसरेमे किया तो पेहला ज्येष्ट छुटा, आखीरकार महिना एक छुटता ही है, यातो ! पुनरुक्त दोष गिनो या एक महिना छोडो, असलमे (३०) दिन छोडना मंजुर ही रहा, अब अधिक महिना गिनतीमें प्रमाण कहां रहा ?

सवाल चौथा, तारिख (२७) जुलाई सन (१९१३)के लेखमें आपने लिखा कि जैनज्योतिषमें तिथिकी हानिवृद्धि दोनों होती है, परंतु यहां मुनिश्री माणिसागरजी कहते है चंद्रप्रज्ञप्ति–ज्योतिषकरंडक वृत्ति–लोकप्रकाश विचारामृतसंग्रहवगेरा शास्त्रोके प्रमाण अनुसार जैनज्योतिषकी गिनतीमें (६१)मी अवमरात्री होकर (६२) मी तिथिका क्षय आता है, और छपाहुवा लोक प्रकाशनामा ग्रंथके स्वर्ग (२८)मा पृष्ट (११२१)से (११३०) तक देखलेना वृद्धिका

सर्वदा अभाव है, तो फिर आपने किस शास्त्रानुसार वृद्धि होनेका लिखा? शास्त्रका पाठ जाहिर किजियेगा.

(जवाब) लिजिये! शास्त्रपाठ जाहिर करता हुं, सुनिये! छपे हुवे लोक प्रकाशके पृष्ट (११३१) पर (४४)मे श्लोकमे साफ लिखा है.

चंद्रमासविवक्षायां सूर्यमासव्यपेक्षया।
कालस्य हानिर्वृद्धिश्च सूर्यमास विवक्षणे ॥

कर्ममास (यानी) रितुमास और चंद्रमासकी अपेक्षा हानि, और रितुमास सूर्यमासकी अपेक्षा वृद्धि होती है. देखिये! मेने हानिवृद्धिके बारेमें जैनशास्त्रका पाठ बतलादिया, सूर्यप्रज्ञप्तिकी वृत्तिमें जहां अवमरात्रीका अधिकार चला है वहां लिखा है कर्म मासकी अपेक्षा सूर्यमासकी गिनतीसे एक अधिक रात्री होती है. (३०) अहो रात्रीका एक कर्ममास (यानी) रितुमास होता है. और साढेतीस अहोरात्रीका एक सूर्यमास होता है. दो महिनेकी एक रितु होती है, इस गिनतीसें छह रितुमें छह अहोरात्र बढे, ख्याल किजिये! इस अपेक्षा हानिवृद्धि होना साबीत हुवा या नही? अकलमंदोको चाहिये, दोनो तर्फके पाठ देखकर उसके नतीजेपर आवे.

दुसरी यहबात है कि ग्रहोके परिवर्तनसे अगर कालकी हानिवृद्धि नहोती हो तो महिना कहांसे बढेगा? फिरतो आपका अधिक महिनाही ऊड जायगा, यातो! आप जैनज्योतिषपर चलना कायम करे या लौकिक ज्योतिषपर! जब दो श्रावण या दो भादवे आते है तो बतलाइए! जैनज्योतिषमें इन महिनोकी वृद्धि होती है या नही? इसका कोई जवाब देवे.

सवाल-पांचमा, इस सवालमें जहोरी दलिपसिंहजीने लिखा है कि आप कहते है लौकिक पंचांगके मुजब पर्वतिथिका क्षय हम

नही मानते है, तो संवत् (१९६२)के जोधपुर पंचांगमे भाद्रपद सुदी पंचमीका क्षयथा, ऊसी मुजब बंबईकी मांगरोल जैनसभाने और भावनगरकी जैनधर्मप्रसारक सभा वगेराके सर्व पंचांगोमें पंचमीका क्षय माना, और आपनेभी खानदेश धुलिया शहरमें चौमासाकरके पंचमीका क्षयमानकर चौथकों खरतरगछवालोके साथ संवत्सरीप्रतिक्रमण क्यौं किया? इसका खुलासा दिजियेगा.

(जवाब) सुनिये! खुलासा देताहुं. दरअसल! तमामजैनोको मुताबिक जैनज्योंतिषके बर्ताव करना चाहिये, और में वैसाही करताहुं. संवत् (१९६२)का पंचांग निकालकर देखिये! तपगछवाले मुताबिक जैनज्योतिषके बर्ताव करते है, भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीकी संवत्सरी करना तपगछ खरतरगछवाले दोनो मानते है, इसमें एक दुसरेका साथ क्या किया? शिवायतपगछ खरतरगछके दुसरेभी कईगछ जैनश्वेतांबरसंघमें मौजूद है जो चतुर्थीकी संवत्सरी मानते है. जैसे आपनेकहा खरतरगछवालोका साथ किया वैसे, दुसरे गछवाले कहेंगे हमारा साथ किया, असलमें कोई गछवाले हो तमामजैनोको मुताबिक जैनज्योतिषके बर्ताव करना चाहिये.

सवाल छठा–देशकालानुसार जो कोई आचरणा प्रभाविक आचार्य करे वो सर्व जैनसंघ मंजुरकरे, ऊसीके अनुसार सर्वगछोके पूवाचार्योंने व्याख्यानके समय मुहपत्ति बांधना शुरु कियाहै, और पूवाचार्योंकी आज्ञा न माने वो मिथ्यात्वी और अनंतसंसारी कहा.

(जवाब) किस जैनाचार्यने कौनसे संवत्में व्याख्यानके वख्त मुखपर मुखवास्त्रिका बांधना शुरु किया? इसका सबुत क्यौं नही बतलाया? पूर्वाचार्य कुछ जिनेंद्रोसे ज्ञानमे बडे नही, क्या! देशकालके जाननेवाले तीर्थंकर देव नही थे? ऊनको तो अपने केवलज्ञानमें देशकाल सबकुछ जानपडताथा, रूढी और आचरणा धर्मशास्त्रसे बडी नही, रूढी तो कईतरहकी चलपडेगी, कहांतक कोई

ऊसपर अमल करेंगे. जो बात धर्मशास्त्रोमे लिखी होगी वही काबिलमंजुर करनेके होगी. दरअसल! किसी जैनआगममें जैनमुनिको व्याख्यानके वख्त या तमामदिन मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना नही लिखा, अगर लिखा है तो कोईपाठ बतलावे, मेने कईदफे जैनअखबारोमें इसके बारेमें लेख दिये, मगर किसी जैनने जवाब नही दिया. औघनिर्युक्तिशास्त्रमे साफ लिखाहैकि जैनमुनि मुखवस्त्रिका मुखके आगे रखे. याते कोई रज रेणुं या जंतु मुखमें न आनगिरे, शास्त्रवाचतेवख्त अपने मुखका थुंक शास्त्रपर न गिरे, शिवाय इसके दुसरा कोई सबब नही.

आगे इसी छठे सवालमें जहोरी दलिपसिंहजीने लिखा है:– आपके गुरुमहाराजश्री आत्मारामजीने अज्ञानतिमिरभास्करके पृष्ट (३२०)में यह गाथा लिखी है.

छठठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमास खमणेहिं,
अकरंतो गुरुवयणं अणंतसंसारिओ भणिओ.

तो फिर आप व्याख्यानसमय मुहपत्ति बांधनेका निषेधकरके गुरुजन पूर्वाचार्योकी आशातनासे अनंतसंसारका कारण क्यौं करते हो?

(**जवाब**) व्याख्यानके वख्त मुहपर मुहपत्ति बांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा, और इसीलिये में निषेध करताहुं, आप अगर इसका कोईपाठ बतलावे तो मेरा निषेधकरना बंद होसकता है, आचरणा परंपरा या रुढी तीर्थंकरोके फरमानसे बडी नही; महाराजश्री आत्मारामजी आनंदविजयजी साहबने अज्ञान तिमिरभास्कर ग्रंथके पृष्ट (३२०)पर जो गुरुकी आज्ञा न माने ऊसको अनंतसंसारी कहा, यह उसी गुरुकी अपेक्षा कहाहै, जो मुताबिकफरमान तीर्थंकर गणधरोके चलनेवाले हो. मनमानी आचरणा या रूढी चलानेवालोके लिये नही कहा.

सवाल सातमा.—जहोरी दलिपसिंहजीने इसमें लिखा है, आप कईदफे छापेमें लिखते है रैल हमारे वास्ते नही बनी, तो हमारे बेठनेमें क्या दोष है? इससे तो कसाई जीवहिंसा करता है तो किसीका नामलेकर नही करता, फिर मांसखानेवालेको दोष लगे या नही? वैसेही हलवाईभी सबतरहकी मीठाई बनाताहै तो किसीका नामलेकर नही बनाता, फिर जैनमुनिकों मौललेकर खानेमें क्या! दोष है? अगर आप कहेगे दोषनहीतो साधुके गौचरीके बेतालीश दोषोमें क्यौं मनाकिया? और यदि आपकहेगे दोष है तो रैलमेभी दोष क्यौं नही?

(**जवाब**) रैलमें बेठनेवाले जैनमुनिको दोष इसलिये नही कि ऊनका ईरादा धर्मका है, पांचइंद्रियोकी विषयपुष्टिका नही, कसाईके पाससे मांस मौल लेनेवालेको पाप इसलिये है कि ऊनका ईरादा पांचइंद्रियोंकी विषयपुष्टिका है, धर्मका नही. हलवाईके वहांसे मिठाई मौललेनेके बारेमेभी ईरादेपर बातहै. जैनमुनि परिग्रहके त्यागी होतेहै. फिर वे हलवाईके पाससे मिठाई मौलकैसे लेयगे? जैनमुनिकों भिक्षामांगकर अपनागुजरान करना कहा. कोई महाशय चाहे जितनी दलील पेंशकरे, सामने ईन्साफके बेइन्साफी बातोंका गुजर नही.

जैनमुनिको विहारके वख्त रास्तेमें नदीआजाय तो नावमें बेठकर पार होना हुकम है, चुनाचे! नदीमें नाव चलनेसे पानीके जीवोकी हिंसा होती है, मगर इरादा धर्मका होनेसे भावहिंसा नहीं, और विनाभाव हिंसाके पाप नहीं, इसी तरह रैलके लिये भी समजो.

आजकल कईश्रावक बसबब रैलके अपना वतन छोडकर दुरदुरके मुल्कोमें जाबसे हैं, जहांकि जैनधर्मका जाननेवाला उपदेशक नही मिलता, अगर उसजगह कोई जैनमुनि बजरीये रैलके जावे और वहां तालीमधर्मकी देवे, तो धर्मका फायदा है, हां!

अगर कोई जैनमुनि शौखसे रैलमें बेठकर मुल्कोकी सफर करे तो बेशक! पाप है. और उसकी मुमानियतभी है, क्योंकि ईरादा उनका धर्मपर नही रहा.

आगे इसीसातवे सवालमे जहोरी दलिपसिंहजीने लिखा है इसके आलावे रैलमें बैठनेवाले जैनमुनिकों टिकिटखर्चेकी चिंता स्त्रीसंघटा रात्रीविहार दीपकका ऊजाला सुखशीलता प्रमाद ग्रामोके चैत्यदर्शनका अभाव वहांके श्रावकोंकों धर्मोपदेशकी अंतराय तथा टेशनपरसे घोडे गाडीपर सवार होकर रात्रीकों गांवमें जाना, बेटाइमपर गौचरीका अभाव वगेरा दोषोका कारण क्यों करते हो? सो कृपा करके सब बातका स्पष्ट खुलासा लिखियेगा.

(जवाब.) सब बातका स्पष्ट खुलासा लिखताहुं सुनिये! रैलविहारी जैनश्वेतांबर मुनियोके लिये आदमी भेजकर टिकिटखर्चेका बंदोबस्त श्रावक लोग करते है, निस्पृही सत्यवक्ता और अपने पूर्वकृत कर्मपर भरुसा रखनेवालोके सब काम ठीक ठीक तौरसे हुवा करते है, जो जो जैनश्वेतांबरमुनि पेतालिस आगमके पुरेजानकार और पंडित है, उनको हरजगह भक्ति करनेवाले श्रावकलोग मिलते है, ज्ञान एक ऐसी उमदा चीज है कि ऊसकी हरेक सख्सकों जरुर पडती है. इस लिखनेका मतलब यह है कि ज्ञान एक पूजनीक गुण है, दुसरीबात यह है कि हरेक शख्शको अपने लाभांतराय कर्मके टुटनेपर योग्य चीज मीलती है, जैनशास्त्रमें लिखा है कि:-

अंतरायक्षयादेव, लाभो भवति नान्यथा;
ततश्च वस्तुतत्वज्ञो, नो लाभमदमुद्वहेत्. १

इसका मतलब यह हुवा कि अपने लाभांतरायकर्मके क्षयसे जीवको योग्य चीज मिलती है इस लिये पदार्थज्ञानको जाननेवाले

महाशय फायदा होनेपरभी किसी तरहका मान नही धराते, जलमें नाव चलती है, जमीनपर रैल चलती है, जमीनसे पानीमें ज्यादा जीवहिंसाहोनेका सबब है, इस बातपर कोई गौर करे.

रैलमें बेठनेवाले जैनश्वेतांबरमुनिकों परिग्रहकी वृद्धि होगी ऐसा जो पुछा गया है, उसका जवाब सुनिये ! लोभलालचमें न पडेतो परिग्रहकी वृद्धि नही होसकती, यह एक सिधी सडक है, रैलमें सफर करनेवाले जैनमुनिकों स्त्रीयोका संघटा होगा ऐसा जो पुछा गया है, जवाबमें मालुम हो, उपयोगसे बर्तावकरे या अलगकंपार्टमें बैठे तो स्त्री स्पर्श नही हो सकता, रैलविहारी जैनमुनियोके लिये रात्रीको विहार करनेका और दीयेका चांदना लगनेका जो पुछा गया है, जवाबमें मालुम हो दिनमें जानेवाली रैलमें सफर करे तो ये दोनों बातें बचसकती है. रैलमें जानेसे सुखशीलता और प्रमाद बढेगा ऐसा जो पुछा गया है जवाबमें मालुम हो, सुखशीलता और प्रमाद जब बढे कि रैलमें बेठनेवाले जैनमुनि एक गांव या शहरमें बहुत अर्सेतक कयाम करे, में हरवख्त विचरता रहताहुं, में जिस-गांव या शहरमें जाताहुं, व्याख्यानधर्मशास्त्रका हमेशां देताहुं, ग्रंथ बनानेके काममें या किसीके सवालोंपर जवाब देनेमें लगा रहताहुं. जो लोग मेरे सहवासमें आचुके है बखूबी जानते होगें.

रैलमें बेठनेवाले जैनमुनिकों हरेकगांवोके चैत्यदर्शनका अभाव होगा, ऐसा जो पुछागया है, जवाबमें मालुम हो, पैदलविहारी जैनमुनिकोभी यह अभाव बनारहेगा, जोजो गांव रास्तेमें पडेगें ऊसजगहके जिनमंदिरोके दर्शन करसकेगें, ईसीतरह रैलविहारी जैनमुनिभी जहां जिनमंदिरका योगहोगा, ऊतरकर दर्शन करसकेगें. आपलोगोने जैनशास्त्रोमें कईजगह सुनाहोगा कि पेस्तर जंघाचारण विद्याचारण जैनमुनि अपनी लब्धिसे आसमानमें ऊडतेथे. कहिये ! ऊनकोंभी रास्तेमें हरेकगांवके चैत्यदर्शनका अभाव होताथा या

नही? मगर इससे क्या हुवा? और जब वें अपनी लब्धिसे आस्मानमें ऊडतेथे, तो बतलाइये! ऊनके शरीरसे जो वायुकायके जीवोकी हिंसा होतीथी, ऊसका पाप ऊनको लगताथा या नही? अगर कहाजाय इरादा धर्मकाथा, इसलिये भावहिंसा नही और विना भावहिंसाके पाप नही, तो इसीतरह रैलविहारके लियेभी समजो.

रैलमें बेठनेवाले जैनमुनिको हरेकगांवके श्रावकोकों धर्मोपदेश देनेकी अंतराय रहेगी, ऐसा जो पुछागया है, जवाबमें मालुम हो, जहां पैदलविहारी जैनमुनि नही जासकेगें रैलविहारी जैनमुनि जासकेगे, इसलिये उनको धर्मोपदेश देनेकी अंतराय नही, बल्कि! छुट रहेगी. मेने जो किताब जैनतीर्थगाइड बनाई है, ऊसमे देखो! कहां कहांतक मेराजाना हुवाहै, करीब (६) वर्षतक जैनश्वेतांबर तीर्थोंकी तलाशीमें फिरना हुवा, पुराने शिलालेखोको अपनी नजरसे देखकर बडीमहेनतसे ऊनकी नकल किई, कईमहाशय जैनश्वेतांबरतीर्थकी मरम्मत करवाते है, कई जैनमंदिर बनवाते है, मेने खयाल किया एक किताब ऐसी बनाना चाहिये, जिसमें तमाम जैनश्वेतांबरतीर्थोंकी प्राचीनताका हाल मिलसके. गोया! मजकुर किताब जैनश्वेतांबरतीर्थोंका एक मखजन है, इतनी शोध करनेपरभी मेने किसीपर कुछआसान नही किया, अपनेआत्माके अशुभकर्मोंकी निर्जराके लिये प्रयत्न किया है, जैनधर्मकी प्राचीनताके लेख मयसबुतके अपनी कोमकेसामने पेशकरना, हरेक जैनका फर्ज है, वहीफर्ज मेने अदा किया है.

संवत् (१९६५) में जब मेराजाना मुल्क दखन हैदराबादके आगे तीर्थ कुल्पाकजीमें हुवाथा, उसवख्त ऊसतीर्थकी किसकदर कमजोरहालत होगईथी, देखनेवाले जानते होगे, मेने वहांपर आये हुवे दखनहैदराबाद और सिकंदराबादके श्रावकोकों जीर्णोद्धारके लिये ऊपदेश दिया, ऊसीसालमें जीर्णोद्धारका काम जारी हुवा,

और आज उसतीर्थकी कितनी तरक्की हुई है? कोई जाकर देखे, या दखन हैदराबाद, सिकंदराबादके श्रावकोसें दरयाफत करे, पहलेके जैनाचार्योंने और जैनमुनियोने जोजो फायदे जैनसंघकों पहुचाये ऊनकी बराबरी आपन लोगोसे क्या होसकती है? मगर जब कोई इस बातका सवाल करे तो सचबात लिखना कोई बें-ईन्साफ नही. इसलिये यह बात लिखी गई है. आगे रैलविहारी जैनमुनिको बगीमें बेठकर रात्रीको गांवमें जाना पडेगा ऐसा जो पुछागया है ऊसके जवाबमें मालुम हो, दिनमें जानेवाली रैलमें बेठे और टेशनपरसे दिनमें पैदलविहारसे शहेरमें जावेतो जासकते है, रैलमें बेठनेबाले जैनमुनिको कभी बेंटाइम गोचरी जाना पडेगा, ऐसा जो पुछागया है, जवाबमें मालुम हो, बेंटाइम गौचरी न जावे, और वख्त होनेपर जावे तो जासकते है, देखिये ! सब बातोंके स्पष्ट खुलासे देदिये है, सात सवालोंके जवाब खतम हुवे, इसपर जो कुछ लिखनाहो, शौखसे लिखे फिर जवाब दुंगा.

फिर जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबके पृष्ट (१५)पर लिखा है कि न्यायरत्नजी महाराजसें विनति करताहुं के इस लेखमें मेरीभुलोकी क्षमाकरके आप अन्यअन्य बातोंकी आड और विष-यांतर न लेकर इन सात प्रश्नोका शिघ्रतासे उत्तर दिजियेगा, इस तस्दीयेंकी माफी किजियेगाजी, आपका उत्तराभिलाषी कृपाकांक्षी दलिपसिंह जहोरी.-

(**जवाब.**) यह किताब न्यायरत्नदर्पण बतौर जवाबके दिई जाती है, छह चीठी और सातसवालोके जवाब इसमें दर्ज है, मेने दुसरीबातोकी आड नही लिइ, और न विषयांतर किया है, आपके लेखोको सामने रखकर बराबर जवाब देता रहाहुं.

आगे जहोरी दलिपसिंहजीने अपनी किताबकी अखीरमें पृष्ट

(१६) पर लिखा है, सब सज्जनोसे विनति करनेमें आती है के इस पुस्तकको आप बांचे, दुसरोकों बचावे, तथा सर्वमें प्रगट करे, और सत्यकी परीक्षा करे.

(जवाब.) इस किताबकोंभी आप देखे, अपने दोस्तोंको दिखलावे, सचबातका इम्तिहान करे, और इसमें दिइ हुई दलीलो-पर गौर करे, मुजे उमेद है चर्चाके ग्रंथ पढनेके शौकिनोंको यह किताब जरुर पसंद होगी.

व कल्म जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर
न्यायरत्न मुनि शांतिविजय.

[जिनाय नमः]

[कवि-सुरजमलजी-साकीन-उदयपुर-मुल्क मेवाडकी बनाइहुई लावनी.]

विद्यासागर न्यायरत्न श्री शांतिविजयजी-बडेअणगार,
संयमलिनो आपने छोडयो कुटुंबसब धनघरबार,
भावनगर गुजरातके मांही-शहरबडो भारी उत्तम,
धन्यहै धरणी वहांकी जहां मुनिजी लियोहै जनम,
धन्य पिता मानकचंदजीको-वे चलते जिनमतको धरम,
थे सतवादी जिनके पुत्र कहलाये अनुपम,
धन्यवाद रलियातकवरकों-माता बुद्धिकी थीअमम,
संस्कारसे आप आजन्मे उदयभये निजपूरवकरम,
महाजन विशाओशवालथे-जूठवचन नही एकलगार,
संयमलीनो आपने छोडयो-कुटुंबसबधनघरबार. विद्या. १

श्रीरी आत्मारामहाराज-जिनोने लिये आपकों है पहिचान,
दीक्षालिनी साल उन्नीस और छत्तीसप्रमान,
वेशाखशुक्ल दसमी गुरुवारे-हुवेसंयमी चतुरसुजान,
मलेरकोट पांचालमुल्कमें जानतेहै सब निखिलजहान,
धर्मशास्त्रकों पढे मुनिश्वर- व्याकरणकोशको भारीज्ञान,
सर्वशास्त्रकों आपने पृथक् पृथक् लिनेसबजान,
पंजाब पूरव मारवाड-गुजरात मालवाकों दियोतार,
संयमलीनो आपने छोड्यो कुटुंब सबधनघरबार. विद्या. २

दखनमेंगये आपमुनिजी-जिनमत खूबदिपायाहै,
देशदेशमें आपका सुजश बहोतसा छायाहै,
मानवधर्मसंहिता एकपुस्तक-बहोतखूब फरमायाहै,
प्रश्नपांचको खंडनकरके मजहब रिसाला बनायाहै,
तीनथुइका परामर्श एक-तीनथुइपें रचायाहैं,
विधि जैनसंस्कार बनाकर तनपरयश उपजायाहै,
गृहस्थापनमें नाम हठीसिंह-जन्मलग्नमें विदितविचार,
संयमलीनो आपनें छोड्यो कुटुंब सबधनघरबार. विद्या. ३

उन्नीसवर्षकी उमरआपकी-जबसें यह संयम धार्यो,
धन्यमुनिजी आपने कामक्रोध रिपुको मार्यो,
सकल कामना तजी जगतकी-लोभपाप पावकजार्यो,
धन्यहो स्वामीआपने निजआतम कारजसार्यो,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि-धर्मधुरंधर पदधाया,
देशदेश और नगर गांवमें सुजश आपने विस्तार्यो,
सुरजमल्लकी हाथजोडकर-मुनिजीवंदना वारंवार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंब सबधनघरबार. विद्या. ४

[दोहा.]

☞ मोहरायके राज्यमें-धर्मरायकी आन,
बरतावे चेतनतदा-जीवित जन्मप्रमान. १

श्री जैनधरम विद्याप्रसारकवरगको
हेड ओफीस मु: पालीताना: श्री १८ पर
... हीरजी ... पार्श्वकुंवरजी ...
... भगवतीखंडदरा ... पांचकुंवर ...